ओम् शान्ति 25-8-14 मधुबन

दादी प्रकाशमणी जी के सातवें स्मृति दिवस पर विशेष भोग

(भोग के समय दादी जी माताओं की भट्ठी के बीच दादी गुल्जार जी के तन में पधारी, सबसे नयन मुलाकात करते मधुर महावाक्य उच्चारण किये)

यह भी कमाल है बाबा की, जो हमें और आपको मिलने का, बोलने का चांस दिलाते हैं। पता है हमारा दिल आप सब साथियों को देख कितना खुश होती है। *(12 हजार मातायें आई हुई है)* मातायें हाथ उठाओ। *(जिन्होंने भी आपकी पालना ली है वह भी आपसे मुलाकात करने सभी तरफ से आये हुए है)* हम भी आप सब साथियों को देख बहुत-बहुत-बहुत खुश होते हैं। जितनी मेहनत बापदादा कर रहे हैं उतना रिटर्न अब देना है। बापदादा की मेहनत ज्यादा है, रिटर्न कम है। रिटर्न है बाप समान बनना।

(क्या नया पुरुषार्थ करें) नया यही करें - बापदादा ने जो कहा वह किया। बापदादा का कहना और बच्चों का करना, एक जैसा होना चाहिए। जितना बापदादा का बच्चों में प्यार है, उम्मीदें हैं, उस अनुसार और भी थोड़ा अटेन्शन ज्यादा दो। एक एक मुरली में बापदादा चलन के ऊपर ही इशारा देते हैं।

(आजकल दादी जानकी जी की तबियत ठीक नहीं चल रही है) अभी ठीक है। दादी आपके साथ है, साथ निभाया है। *(मुन्नी बहन दादी का दिवस बहुत उमंग से मनाती है)* सभी साथी इनका अच्छा साथ निभा रहे है, भाई भी अच्छा निभा रहे हैं।

(एडवांस पार्टी की क्या प्लैनिंग चल रही है) वह तो जैसे भी पार्ट मिला हुआ है, वैसे सूक्ष्म में कुछ न कुछ वायुमण्डल में अपनी शक्ति फैला रहे हैं। *(आजकल दुनिया में अर्थक्वेक आदि कई स्थानों पर हो रही हैं, उसके लिए हम सभी क्या विशेष ध्यान रखें)* सूक्ष्म संकल्प शक्ति से अभी टचिंग कम है। सूक्ष्म टचिंग अन्तर्मुख होके अन्दर की शक्ति फैलावें, वह कम है। अभी सूक्ष्म शक्ति से व्यर्थ को खत्म कर सूक्ष्म में भी आत्माओं को प्रेरणा देने की मन्सा सेवा, टचिंग की वह कम है। *(इस वर्ष हम महापरिवर्तन का वर्ष मना रहे है)* लेकिन अटेन्शन कम है। टॉपिक अच्छी है लेकिन टॉपिक पर अटेन्शन कम है। *(इस टॉपिक के ऊपर हम क्या बतायें)* बतायें नहीं, अभी सूक्ष्म सकाश ऐसी देवें जो लोग खुद आयें आपके पास और यह समझने के लिए आयें कि समय की गति जो चल रही है उनका रहस्य क्या है। अभी लोग अटेन्शन कम दे रहे हैं, लोगों का अटेन्शन इस पर दिलाओ कि परिवर्तन होना है और परिवर्तन में आप क्या हमको साथ दे रहे हैं? उन्हों से प्रश्न पूछो तो वह समझें कि मैं भी साथी हूँ और फिर किसी न किसी रीति से उनसे पूछते रहें। हर एक मोहल्ले में आने वाले होंगे लेकिन वह मेहनत करो जिस मोहल्ले में आते हैं उनकी पीठ करो थोड़ी। नहीं तो सुना और फिर खत्म, उन्हों को समय प्रति समय चाहे लिखत में भेजो, छोटा सा आधा पेज लेकिन कनेक्शन हो। भाषण सुना चले जाते हैं पीठ नहीं होती है। हर एक मोहल्ले में यह इन्डीविज्युअल कर सकते

हैं, जनरल में नहीं कर सकते हैं लेकिन हर एक समझे मुझे अपने मोहल्ले में करना है। सर्विस का अभी अटेन्शन कम है।

(गीता का भगवान सिद्ध करने की सेवा और कैसे बढ़ायें) गीता का भगवान तो ठीक है लेकिन पहले आयें तो सही, गीता का भगवान तो बड़ी बात है लेकिन समझें कि हमको परिवर्तन होना है।

(आप वर्तमान समय कुमार हैं या कुमारी हैं, आप अपने बारे में बतायें) है तो लड़का। *(कहते हैं कृष्ण बड़ा नटखट था, आप तो ऐसे नहीं है)* नहीं। *(हमें बताया गया था 10 लाख भाई बहिनें हो जायेंगे तो स्थापना का कार्य पूरा हो जायेगा, अभी बहुत सेवायें हो चुकी हैं, अभी और क्या करना है जो रही हुई सेवा पूरी हो जाए)* उनकी पीठ कम करते हैं। भाषण सुना, बस अलग अलग हो जाते हैं, उन्हों की एड्रेस लेके उस मोहल्ले में थोड़ा पीठ करें तो एड्रेस लिखानी चाहिए। जो भी आते हैं उन्हों से ऐसा फार्म भरवाओ, फार्म भराकर एक दो इज़ी क्वेश्चन परमात्मा के बारे में पूछो। *(वर्तमान समय सेवा में मेरापन बहुत आता है, उसके कारण आपस में मतभेद हो जाते हैं, तो युनिटी और सेवा के बारे में क्या करें)* दोनों ही करना चाहिए। वह सेवा का पार्ट अपना लेकिन सेवा कर रहे हैं, यह पता नहीं पड़ता है। पहले कोई चेकिंग करे। *(ब्राह्मणों में अगर आपसी एकता नहीं, सिर्फ आपसी खिटखिट में ही सारा टाइम चला जावे वह कहाँ तक राईट है)* इसके लिए क्लासेज़ ऐसी कराओ। उमंग-उत्साह की क्लासेज ऐसी बीच बीच में होनी चाहिए। ज्यादा नहीं कराना, ज्यादा आदत पड़ जाती है। सिर्फ बीच-बीच में अटेन्शन दिलाओ। *(विंग्स और ज़ोन के बारे में आपकी कोई प्रेरणा हो तो बताईये)* जो भी विंग्स सेवायें कर रहे हैं, उसकी बीच-बीच में चेंकिग होनी चाहिए कि क्या सेवा कर रहे हैं, कर रहे हैं या नहीं कर रहे हैं, पहले वह हालचाल पूछते थे, अभी कोई क्या कर रहा है, कोई पूछने वाला नहीं है, इसके लिए अभी अटेन्शन हो, कोई निमित्त बनें। भले मुख्य से पास करायें, लेकिन उन्हों से भी कराने के लिए कोई फिक्स करो। *(टीचर्स का वर्तमान समय किस बात पर विशेष अटेन्शन होना चाहिए)* टीचर्स को सब बातों में अटेन्शन देना पड़े। टीचर्स को सिर्फ सर्विस की तरफ नहीं। एक है धारणायें, दूसरी है पढ़ाई। पढ़ाई के ऊपर भी ध्यान चाहिए और सर्विस के ऊपर भी, धारणाओं पर भी पूरा ध्यान चाहिए। पहले जो विचार सागर मंथन करते थे, वह आजकल नहीं है। मुरली सुनी सुनाई, काम पूरा हुआ। बीच बीच में अपने आपको होमवर्क देवें या पढ़ाई के ऊपर अटेन्शन देवें, सर्विस के ऊपर अटेन्शन दे। जो आपकी मुख्य सबजेक्ट हैं, सारा दिन उन चारों पांचों बातों पर अटेन्शन है या नहीं, चेक करें। अटेन्शन दिलाने वाले भी हों और अटेन्शन रखने वाले भी हों।

(आपका सबसे ज्यादा प्यार किससे है मधुबन वालों से, ज्ञान सरोवर वा शान्तिवन वालों से) सबसे प्यार है। बापदादा को भी सब तरफ के बच्चों से प्यार है। भले मधुबन, मधुबन है। अगर सेन्टर नहीं होंगे तो मधुबन क्या करेगा! *(आपका खासकर बुढ़ी माताओं से ज्यादा प्यार रहा, आप माताओं के लिए कुछ कहें)* मातायें पहले सेवा में

निकलती थी, अभी उस प्रकार की सेवा है ही नहीं। माताओं को अपनी एरिया की एक एक गली बांट लेनी चाहिए और उस गली में से हैण्डस निकालने चाहिए। कुछ नियम रखेंगे तो ठीक है। अभी माताओं की संख्या ज्यादा आई है। अभी भट्ठी है, वह ठीक है लेकिन सेवा और स्व, स्व और सेवा दोनों का बैलेन्स चाहिए। स्व अपना पुरुषार्थ और सेवा भी साथ-साथ हो। पहले जमाने में सेवा का एक चार्ट अलग से चेक करते थे कि मैंने सारे दिन में क्या किया? अभी वह नहीं है। अटेन्शन देना, अटेन्शन दिलाना, अभी वह और चाहिए। प्रोग्राम के बिना उमंग नहीं आता है। प्रोग्राम कोई होता है तो सब लगकर कर लेते हैं, हो जाता है ना। ऐसे कोई न कोई ऐसी टॉपिक रखो।

(दादी जानकी ने कहा कि बाबा ने मुझे इस शरीर में रखा है, तो हमारी भावना है कि बाबा हमारा कैसा है, वह सारी दुनिया पहचान ले। तो हमारी चलन, हमारी लाइफ ऐसी हो, ऐसी हमारी भावना सभी आत्माओं के प्रति हो, किसके प्रति घृणा रखना, शोभता नहीं है, हमारा आपस में कितना प्यार है, रिगार्ड है, यह रिकार्ड हमारा खराब नहीं होना चाहिए)

यह तो मन में एक दो के लिए रिगार्ड आवश्यक है। अगर एक दो में रिगार्ड हो, एक एक की चलन से कुछ न कुछ फायदा उठावें तो फिर यह संगठन पक्का हो। अभी हर एक इन्डीविज्युअल चल रहा है लेकिन संगठन नहीं है। वह जो ताकत होनी चाहिए, वह संगठन की ताकत कम है।

हर एक के अन्दर उमंग आना चाहिए कि बापदादा ने जो कहा है वह हम करके दिखायेंगे। मुरली में रोज़ कोई न कोई प्वाइंट आती है तो वह मुरली की प्वाइंट, होमवर्क करके जो इकट्ठे रहते हैं, वह एक दो को थोड़ा अटेन्शन दिलाओ। हो जायेगा क्योंकि निमित्त तो आप ही हो, कोई और तो है ही नहीं। लेकिन अभी ढीला है। अभी फिर से अटेन्शन दो। शिक्षा के रीति से नहीं करो। आजकल शिक्षा से सब थक गये हैं। आपस में फ्रैन्ड होके उनको कोई भी बात दो तो समझेंगे। थोड़ा सा ऐसा प्लैन बनाओ जो बीच बीच में एक हर एक मोहल्ले में या एरिया में कोई ऐसा मुकरर हो, जो यह अटेन्शन दे। और मुकरर वाला भी अपनी ड्युटी समझें। थोड़ा अटेन्शन दें। भले दादियों की भाईयों की मदद लो, जो निमित्त हैं। अभी पुरुषार्थ कम है। इसमें मेरा नाम क्यों नहीं है, इसमें मैं भी होना चाहिए, यह ज्यादा है। इसको मिटाना पड़े।

(आप जहाँ पढ़ते हैं, उस स्कूल का नाम क्या है?) साधारण नाम है, *(आप इंगलिश में पढ़ते हैं या हिंदी में)* उसमें हिन्दी इंगलिश सब इकट्ठा है। *(मम्मी पापा ज्ञान में हैं?)* कनेक्शन में हैं, *(कहाँ है)* फिर वही नाम याद रखते रहेंगे यहाँ है, यहाँ है। अच्छा। अभी पुरुषार्थ में आगे बढ़ो। हर एक समझे हमें आगे होना है। मुझे आगे बढ़ना है। इतनी सेवा बापदादा दादियां सब करते हैं, हमें आगे बढ़ना है। अच्छा।

ओम् शान्ति 25-8-14 मधुबन

सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति दादी जानकी जी का याद पत्र

प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति लाडले बापदादा और दादियों की पालना में पले हुए हमारे सभी बाबा के नयनों के नूर, सभी स्नेही बाबा के नये पुराने भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - आप सबका सूक्ष्म स्नेह और शक्तिशाली याद की सकाश पहुंचती रही, अभी मेरी तबियत ठीक है। आज दादी जी के स्मृति दिवस पर प्रकाशस्तम्भ पर भी गई, दादी कॉटेज में भी गई। दो दिन पहले पाण्डव भवन में चारों धामों की यात्रा की। अभी कल शान्तिवन में माताओं की भट्ठी के बीच भी सबसे मिली। कल सुबह योग के बाद एक घण्टा अच्छी रूहरिहान की।

बाबा कहता बच्ची जहाँ पीस है वहाँ पेन(दर्द) नहीं। जैसे कल की अव्यक्त मुरली थी। हमारी लाइफ बाप समान बनें उसके लिए 1978 में बाबा ने कितनी प्यार से ऐसी मधुर शिक्षायें दी हैं। कितना बाबा का हम बच्चों से प्यार है। बाबा चाहता है बच्चों में जरा भी देह-अभिमान न रहे।

पिछले 5 महीने से जो शरीर की खिटपिट चलती आ रही थी, ऐसे लगा जैसे वह कल खत्म हो गई। आज जो मेरी स्थिति है, दो दिन पहले नहीं थी। 5 महीने के बाद आज मुझे कोई पेन(दर्द) नहीं है, कोई कम्पलेन नहीं है।

बस अब तो यही धुन है कि मेरा बाप कैसा है, मैं कैसी हूँ! बाप और हमारे में कोई अन्तर न हो। इससे ही बाबा प्रत्यक्ष होगा। सारे विश्व में यह हम सबका बाप है, यह प्रत्यक्ष हो। जब साकार में बाबा था तो सैकड़ों थे, फिर हजारों हुए, अभी लाखों हैं। किसके हैं? वन्डरफुल हमारा बाबा है। बाबा का प्यार माना जैसा बाबा वैसी मैं।

साक्षी होकर देखा जाता है बाबा के साथ से ही हर एक कारोबार चल रही है। हर कारोबार में बाबा ने कैसे हर एक को एक्यूरेट निमित्त बनाया है। कुछ भी नीचे ऊपर नहीं है, न होगा क्योंकि समय, स्वयं, बाबा और परिवार चारों ही सभी के आगे इमर्ज रहते हैं। किसकी कमी न है, न दिखाई पड़ती है, यह ईश्वर की देन है।

पहले मुरली ऐसे लिखत में सबको नहीं मिलती थी। अभी ऐसी मुरलियां लिखत में भी मिलती, पढ़ने को सुनने को भी मिलती और बनने को भी मिलती। बाप समान बनने के लिए यह भी पदमापदम भाग्य है। बाबा कहते बच्चे, जब कुछ भी सोचते हो तो थोड़ा शान्त रहकर फिर सोचो, फिर बोलो, ऐसे नहीं बोलो, न ऐसे देखो, न सुनो। तो देखो, आज हमारे साथ हमारी मीठी दादी गुल्जार भी शान्तिवन में हैं। 12 हजार से भी अधिक माताओं का ग्रुप भट्ठी में आया हुआ है। सभी खूब रिफ्रेश हो रहे हैं। हम दोनों ने कल रात को भी बहुत मीठी-मीठी रूहरिहान की। कितना आपस में प्यार है। अच्छा!

सभी बाबा के बच्चों को दिल से स्नेह भरी याद स्वीकार हो।

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के. जानकी